रघुवंशम्

Q.→ रघुवंश के आधार पर त्रयोदश सर्ग में वर्णित प्रकृति चित्रण करें।

Ans→ महाकवि कालिदास के दो महाकाव्यों में रघुवंश महाकाव्य अपनी कथावस्तु, भाषा, भाव तथा प्रकृति के रम्य वर्णन के कारण संस्कृत साहित्य जगत् में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। महाकवि ने इस महाकाव्य में कथावस्तु को प्रकृति के आवरण से आवृत्त कर इसे अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया। कालिदास प्रकृति के महान अनुरागी एवं सहचर रहे हैं। इन्होंने प्रकृति के उभयपक्ष के आलम्बन और उद्दीपन का वर्णन अपने इस महाकाव्य में किया है। महाकवि के प्रकृति चित्रण की एक और विशेषता यह है कि इसमें कहीं पर भी बाणभट्ट, भवभूति आदि की तरह कठोर प्रकृति का वर्णन नहीं किया गया है। कवि ने सर्वत्र कल्पना की उड़ान भरकर रम्य प्रकृति का मनमोहक एवं जीवन्त वर्णन किया है।

महाकवि ने यद्यपि इस महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग में प्रकृति के विभिन्न रूपों का वर्णन कर इस महाकाव्य को सुरभित किया है। परन्तु विशेषतः त्रयोदश सर्ग में इनका प्रकृति प्रेम देखते ही बनता है। त्रयोदश सर्ग की कथावस्तु का प्रारम्भ तथा अवसान दोनों ही प्रकृति की गोद में ही हुआ है।

सर्वप्रथम इस सर्ग में राम द्वारा समुद्र का बड़ा ही सुन्दर वर्णन प्रस्तुत हुआ है। मर्यादापुरुषोत्तम राम लङ्का नरेश रावण

को मारकर पुष्पक विमान से अपनी भार्या सीता के साथ अयोध्या के लिए प्रस्थान करते हैं। तब ऊपर से सागर की शोभा को देखकर आश्चर्यचकित होकर सागर तथा उसके आस-पास स्थित आश्रमों एवं वनों का अप्रतिम वर्णन करते हैं। वे कहते हैं- हे सीते! मलयपर्वत पर्यन्त मेरे द्वारा निर्मित पुल से विभक्त और फेनिल तथा शरद्काल में नक्षत्रों से सुशोभित रात्रि के लवण-सागर की शोभा को देखो -

वैदेहि पश्याऽऽमलयाद्विभक्तं मत्सेतुना फेनिलमम्बुराशिम्
छायापथेनेव शरत्प्रसन्नमाकाशमाविष्कृत चारुतारम् ॥

(इस समुद्र के किनारे) विविध रत्नों की खान है क्योंकि इसके मार्ग में बहुत से रत्न स्थित हैं। राम कहते हैं कि प्रलयकाल में भी इसका नाश नहीं होता है। यहाँ पर स्थित मछलियाँ मुँह में जल लेकर फव्वारे के समान अपने सिर के छिद्रों से जलधारा को छोड़ती हैं।

पुष्पक विमान से दण्डकारण्य को देखकर राम सीता से कहते हैं कि यहाँ पर स्थित ये तपस्वी होमादि क्रिया करते हुए शान्तिपूर्वक एवं निर्विघ्न होकर रह रहे हैं। दण्डकारण्य के एक भाग को देखकर (श्रीराम कहते हैं कि हे सीता यही वह भूमि है, जहाँ तुम्हें ढूंढते हुए मैंने तुम्हारे नूपुर) को को भूमि पर पड़ा पाकर दुःख को प्राप्त हुआ था। माल्यवान पर्वत के विषय में श्रीराम कहते हैं कि इस उत्तुङ्ग शिखर

Scanned by CamScanner

वाले पर्वत तथा मेघों का स्मरण करता हूँ, जब यहाँ तुम्हारे वियोग में शव में रो रहा था तब ये बादल भी मेरे शोक में जलवर्षा कर रहे थे।

तत्पश्चात् राम गोदावरी का वर्णन करके पुनः पञ्चवटी का वर्णन करते हैं। फलस्वरूप अगस्त्य, सुतीक्ष्ण और शुलकर्ण मुनि के आश्रम का भव्य वर्णन करते हैं। राम पुनः आगे चित्रकूट की भव्य शोभा का वर्णन करते हुए पार्श्व में प्रवाहित गङ्गा का भव्य वर्णन करते हैं —

एषा प्रसन्नस्तिमितप्रवाहा सरिद्विदूरान्तरभावतन्वी
मन्दाकिनी भाति नगोपकण्ठे मुक्तावली कण्ठगतेव भूमि

चित्रकूट में स्थित अत्रि एवं उनकी पत्नी अनुसूया का वर्णन करते हुए तदनन्तर प्रयाग स्थित सङ्गम का बड़ा ही विशद एवं मनोहारी वर्णन करते हैं — यहाँ गङ्गा पर नीले जल एवं यमुना के कृष्ण जल का सङ्गम वैसे ही सुशोभित हो रहा है जैसे कृष्णसर्प से अलङ्कृत भस्मयुक्त शिवजी का शरीर शोभायमान होता है। यहाँ उपमा की बड़ी सुन्दर छटा दर्शनीय बन पड़ी है —

क्वचिच्च कृष्णोरगभूषणेव भस्माङ्गरागा तनुरीश्वरस्य।
पश्यानवद्याङ्गि! विभाति गङ्गा भिन्नप्रवाहा यमुनातरङ्गैः॥

संगम की महत्ता का वर्णन बड़े विशद रूप में किया गया है। तदनन्तर निषादराज के नगर शृङ्गवेरपुर तथा सरयू नदी

Scanned by CamScanner

.03 Mar. 2019

M	T	W	T	F	S	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

TUESDAY 05
FEBRUARY 2019
WK 06 • 036-329

का वर्णन करते हैं।

इसप्रकार महाकवि कालिदास ने रघुवंश के त्रयोदश सर्ग में प्रकृति का रम्य एवं सरस वर्णन किया है। वैदर्भी के आचार्य, उपमा के धनी महाकवि ने इस सर्ग में प्रकृति का भव्य वर्णन प्रस्तुत कर प्रकृति के प्रति अपना समर्पित स्नेह एवं सद्भावना को प्रकट किया है। जिसमें समुद्र तथा उसमें समाहित जल-जीवों के साथ-साथ तट पर स्थित ताल-तमाल वृक्षादि, बालूकामय भूमि, आश्रम, नदियों, पर्वतों आदि का भव्य वर्णन प्रस्तुत किया गया है। यही नहीं लोकोनाद मयूरों की केकाध्वनि से युक्त मयूरों के नृत्य एवं मृगशावकों के चञ्चल विलास का अलङ्कृत शैली में वर्णन कर कवि ने इस सर्ग को पुष्पित तथा पल्लवित करते हुए सुशोभित किया है। महाकवि का लोक के प्रति यह एक अमूल्य उपहार है। प्रकृति का सरस एवं रम्य स्थलों का मनोहर जसाद-पूर्ण शैली में वर्णन होने के कारण यह महा-काव्य संस्कृत साहित्य-जगत में अपना अत्यन्त स्थान रखता है।

(इति)

(डॉ० सविता ओझा)

Scanned by CamScanner